उपयोग

काष्ठ : इसका उपयोग पैनेल, टेबल बोर्ड, गाड़ियों के ढाँचा बनाने में, कृषि उपकरण तथा अन्य उपकरणों के हैंडल बनाने में किया जाता है।

चारा : महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब, त्रिपुरा उ.प्र. में इसकी पत्तियों तथा कोमल शाखाओं का उपयोग चारे के रूप में होता है।

जलाऊलकड़ी : इसके काष्ठ में 6.84 प्रतिशत आद्रता तथा 89.56 प्रतिशत कार्बन होता है, जो इसकी ज्वलनशीलता को बढ़ाता है। इससे उच्च कोटि का कोयला प्राप्त होता है।

रेशे : इसके रेशे की लंबाई लगभग 0.70 से 1.65 मि.मी. तथा मोटाई लगभग 0.014 से 0.020 मि.मी. होती है जो पेपर व लुगदी के रूप में प्रयोग में लाने हेतु इसे आदर्श प्रजाति बनाते है। इसकी काष्ठ से उच्च कोटि के छपाई वाले कागज का भी उत्पादन होता है।

औषधीय व अन्य उपयोग : पौधे के सभी हिस्सों का उपयोग कैंसर रोधी के रूप में होता है। इसकी जड़ से प्राप्त सैपोनिन का तनु घोल (0.008 प्रतिशत) पेट के कीड़ों को मारने में होता है। इसकी पत्तियों का उपयोग कीटनाशक अथवा अलसर के इलाज में होता है। तने के ऊपरी सतहों का आसवित जल हड्डियों के जोड़ो के दर्द, रक्त के बहाव को रोकने तथा गर्भावस्था में, अथवा पेट दर्द दूर करने में किया जाता है। इसके बीजों में प्रोसिरेनिन होता है, जिसका उपयोग चूहों के मारने में किया जाता है।

कृषिवानिकी तथा नाइट्रोजन स्थिरीकरण : इसकी जड़ों में मिट्टी को बाँधने की अच्छी क्षमता होती है, इस कारण इसका उपयोग कृषिवानिकी में बहुतायत से चाय व काफी उत्पादन हेतु किया जाता है। यह प्रजाति वातावरण की नाइट्रोजन को संचित कर मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाने में सहायक है।

अर्थतंत्र : 20 वर्ष की आयु वाले रोपण का 15 प्रतिशत छूट (डिस्काउंट रेट) तथा 19 प्रतिशत आंतरिक प्राप्ति की दर से लाभ/लागत का अनुपात 1.21 है।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. प्रेम कुमार राना एवं डॉ. एस.ए. अंसारी

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761-2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761-2840627

Amrit Offset # 2413943

सफेद सिरस

Albizia procera

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी, मण्डला रोड

जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

परिचय

सफेद सिरस (*एल्बीजिया प्रोसेरा*, कुल माइमोसी) भारत के सभी मानसूनी प्रक्षेत्रों में पाई जाने, तथा तेजी से बढ़ने वाली, प्रजाति है, इसके वृक्ष की ऊँ चाई लगभग 25 मीटर व गोलाई लगभग 60-70 से.मी. होती है। वृक्ष का तना भूरे सफेद तथा हल्के हरे रंग का चिकना तथा सीधा अथवा टेढ़ा मेढ़ा होता है। इसमें पुष्पन जून से सितम्बर माह में होता है। इसकी फली में 6 से 12 बीज होते है तथा बीजोत्पादन प्रचुरता से होता है। बीज के परिपक्व होने में 3-5 महीने लगते है।

वनवर्धन लक्षण

प्रकाश - उच्च प्रकाश सहय।

मृदा अवस्था - सूखे, बंजर अथवा ऊपर जमीन पर यह जीवित रहता है।

पाला - यह पालारोधी होता है।

आग - यह आग के प्रति संवेदनशील है।

कापिस क्षमता - उच्च कापिस क्षमता वाली प्रजाति है।

रोपणी व रोपण विधि

क्यारी की तैयारी, बीज संग्रहण व बोआई : क्यारी की मिट्टी बालुई होनी चाहिए। बीजों का संकलन स्वस्थ वृक्षों से करना चाहिए। धूप में सुखाए गए बीजों की जीवितता लम्बी अवधि की होती है। बीजों को बोआई के पहले 24 घंटे गर्म पानी में डुबाया जाना चाहिए। अंकुरण 3 से 4 दिनों में प्रारंभ होता है, तथा 90 प्रतिशत बीज अंकुरित होते हैं। तीन महीनों में पौधों की ऊँचाई लगभग 1.5-2 फीट हो जाती है। बीजों की बोआई 8 से.मी. दूरी की लाईन में तथा बीजों की परस्पर दूरी 5 से.मी. होनी चाहिए। द्विपत्रीय अवस्था में पौधों का स्थानांतरण मिट्टी, रेत व खादयुक्त पाली बैग में करना चाहिए।

ठूँठ की तैयारी : एक वर्षीय पौधों का चयन ठूँठ की तैयारी में करना चाहिए।

खेत की तैयारी : यह प्रजाति दोमट रेतीली मिट्टी में अच्छे से विकसित होती है। गर्मी के पूर्व 30 से.मी. X 30 से.मी. X 30 से.मी. का गड्ढा खोदकर उसमें मिट्टी के साथ जिप्सम अथवा गोबर खाद आंशिक रूप से मिलाना चाहिए। आद्र जलवायु वाले क्षेत्रों, जैसे आसाम में बिना गड्ढा खोदे ठूँठ को लगाया जाता है।

रोपण : मानसून आने पर ठूँठ अथवा पौधों का रोपण किया जाता है। 2 मी. X 2 मी. अथवा 3 मी. X 3 मी. वाले ब्लाक रोपण में अपेक्षाकृत ज्यादा अच्छे परिणाम मिलते है। कृषि क्षेत्रों में अथवा मेंड़ पर 3 मीटर अथवा 4 मीटर की दूरी पर पौधा लगाया जाता है।

संरक्षण

चराई : भेड़, बकरियों, हाथी तथा चराई करने वाले जानवरो से इसें बचाया जाना चाहिए।

कीट प्रकोप : जून से सितंबर महीने में पत्तियों पर *यूरेमा ब्लेन्डा* तथा अन्य कीड़ो का आक्रमण होता है, जिससे बचाने के लिए मोनोक्रोटोफास का 0.04 प्रतिशत घोल का छिड़काव किया जाता है। इसके तनों पर *जाइस्ट्रोसेरा ग्लोबोसा* लार्वा का आक्रमण होता है, जिससे बचने हेतु पैराडाईक्लोरो बेंज़ीन तथा मिट्टी तेल 1:10 भाग में मिलाकर छिड़काव किया जाता है। इसकी जड़ों में *गैनोडर्मा* फफूँद का आक्रमण भी होता है, तथा छोटे पौधों पर मुरझाने की बीमारी *फ्यूजेरियम* फफूंद के कारण होती है। इसके उपचार हेतु 0.3 प्रतिशत डाइथेन घोल का छिड़काव करते है। तनों में भी *फ्यूजेरियम* फफूंद के कारण गांठ बनने की बीमारी होती है, जिसे 0.3 प्रतिशत फाइटोलोन घोल के छिड़काव से नियंत्रित किया जाता है। पत्तों को *रेवेनेलिया* के आक्रमण से बचाने हेतु 0.2 प्रतिशत सल्फेक्स घोल का छिड़काव किया जाता है।

पुर्नरूत्पादन

प्राकृतिक पुर्नरूत्पादन बीज अथवा कॉपिस द्वारा किया जाता है। इसमें जड़ोत्पादन काफी मुश्किल होता है। कृत्रिम पुनरूत्पादन निम्न विधियों द्वारा होता है :

- बीज
- कॉपिस
- बरसात में गुट्टी बांधना
- उत्त्क संवर्धन
- पत्तियों द्वारा लघु प्रजनन के माध्यम से
- कोमल प्ररोहों का 100 ppm IBA के घोल में 4 घंटे के उपचारण द्वारा